पवनपुत्र हनुमान जी

इस एक शब्द में ही सारे ध्यान समाचार निहित हैं। 'पवन पुत्र' यानि वायुपुत्र होना अर्थात् साँस पर ध्यान देना अथवा आनापानसति का अभ्यास करना।

दिव्यचक्षु की उत्तेजना को विपस्सना कहते हैं। स्वामी अर्थात निर्वाण प्राप्त करने वाला। इस प्रकार वायु पुत्र हनमान परम योगी हुए। हनुमान अंजना के पुत्र हैं और दिव्यचक्षु को भी अंजना कहा जाता है। आंजनेय-जिसे दिव्यचक्षु प्राप्त हैं अथवा हनुमान स्वामी आंजनेय सदैव स्वाध्याय निरत रहते हैं। हमारे आदर्श मास्टर हनुमान जी का मुख्य सन्देश है कि स्वाध्याय को और बढ़ाना चाहिए।

पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी के लिए स्वाध्याय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है।